आधुनिक काल

PAGE NO. 37
DATE / /

आधुनिक काल संवत् 1900 से अब....

आधुनिक साहित्य की मूलभूत विशेषता है- गद्य का आविष्कार। खड़ीबोली को गद्य एवं पद्य दोनों रूपों में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। साथ ही, इस काल के साहित्य में विविध काव्यरूपों का प्रयोग भी हुआ- कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, जीवन-चरित, निबंध, रेखाचित्र, एकांकी, रिपोर्ताज, डायरी, बालिकी साहित्य आदि। पर, यह भी स्मरणीय है कि आधुनिक काल के साहित्य का विधान बहुत कुछ अँगरेजी, बंगला, गुजराती और मराठी भाषाओं के साहित्य का ऋणी है।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:—

1. पद्य के साथ गद्य का विकास
2. भाषा का परिवर्तन
3. राष्ट्रीय भावना का उत्थान
4. नवयुग की चेतना का विवेचन
5. शैली - परिवर्तन
6. शृंगारभावना का विकास
7. प्रकृति - चित्रण
8. वादों का प्राधान्य
9. अंग्रेजी प्रभाव
10. साधारण विषय

आधुनिक हिन्दी काव्य का विकास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की छत्रछाया में हुआ। भारतेन्दु के साहित्यनिर्माण के साथ-साथ हिंदी में नवीन काव्यचेतना का प्रादुर्भाव हुआ। अतः आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियों के अध्ययन के लिए भारतेन्दु से अब तक की प्रवृत्तियों का विवेचन तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं:-

1. पूर्व छायावाद युग - (अ) भारतेन्दु युग, (ब) द्विवेदी युग
2. छायावाद युग
3. छायावादोत्तर युग - (क) प्रगतिवाद (ख) प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद

Scanned with Cam

PAGE NO. 38
DATE / /

भारतेन्दु युग :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में आधुनिक युग का प्रथम उत्थान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से स्वीकार किया है। भारतेन्दु-युग का समय 1868 से 1903 ई० तक निर्धारित किया गया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी-गद्य का जनक माना जाता है। अपने विशाल साहित्य का निर्माण कर इन्होंने हिन्दी में अनेक नवीन विधाओं का द्वार उन्मुक्त कर दिया था। भारतेन्दु द्वारा प्रयुक्त हिन्दी 'हरिश्चन्द्री हिन्दी' मानी जाती है, जैसे आगे चलकर प्रेमचंद द्वारा प्रयुक्त शैली को 'प्रेमचन्दी हिन्दी' या 'हिन्दुस्तानी' कहा गया था। उनकी खड़ी बोली में रचित कविताओं का एक संग्रह 'फूलों का गुच्छा' नाम से प्रकाशित हुआ था।

भारतेन्दु मण्डल के सहयोगी लेखक :- बालकृष्ण भट्ट, दामोदर शास्त्री सप्रे, काशीनाथ खत्री, राव कृष्णदेव-शरण सिंह गोप, श्रीनिवासदास, राजा खड्गबहादुर मल्ल, सहबजादे सुरेर सिंह, मोहन लाल विष्णुलाल पंड्या, कार्तिक प्रसाद खत्री, केशवराम भट्ट, बदरीनारायण उपाध्याय, प्रेमधन, जगमोहन सिंह, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, रामकृष्ण वर्मा, गोस्वामी राधाचरण तथा राधाकृष्णदास प्रमुख हैं।

भारतेन्दु युगीन विशेषताएँ :-
1. गद्य-शैली का परिमार्जन एवं परिष्करण,
2. गद्य की विविध विधाओं का विकास
3. समकालीन जीवन का चित्रण
4. पत्र-पत्रिकाओं का बाहुल्य

Scanned with Cam